किस्त-4

उसूले दीन

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह

बारह इमाम

नीचे रसूलुल्लाह के सच्चे ख़लीफ़ाओं के नाम और संक्षिप्त जीवनियाँ दिये जा रहे हैं।

पहले इमाम

अली नाम, पिता अबूतालिब माँ फ़ातिमा बिन्त (पुत्री) असद। अबूतालिब के पिता अब्दुल मुत्तलिब थे जो रसूलुल्लाह के दादा थे इस तरह अली रसूल के सगे चचा के बेटे थे।

जन्म

आप रसूलुल्लाह के जन्म के तीस वर्ष के बाद पैदा हुए। आपका जन्म ख़ास काबे के अन्दर हुआ यह विशेषता आपके अलावा किसी और को प्राप्त नहीं हुई।

पालन-पोषण

हज़रत अली बचपन ही से रसुलुल्लाह के साथ रहे इस लिए कि आप के पिता अबूतालिब ही रसुलूल्लाह के पालन पोषण करने वाले थे और जब हज़रत अली केवल सात वर्ष के थे तो रसूलुल्लाह ने अपने चचा से इनको मांग कर अपनी सुरक्षा में ले लिया था। उसके बाद हज़रत अली रसूलुल्लाह के अन्तिम समय तक उनके साथ रहे।

इस्लाम का प्रचार

जब हज़रत रसूल के पास अल्लाह का पहला संदेश पहुँचा तो हज़रत ख़दीजा (रसूल की पहली पत्नी) के अलावा सबसे पहले हज़रत अली ने आपके सच्चे रसूल होने की गवाही दी। कुटुम्ब वालों को इस्लाम का संदेश पहुँचाने के समय भी आप ही ने सहायता का वादा किया। जब रसूल ने हिजरत की (मक्का छोड़कर मदीना चले गये) तो अल्लाह की आज्ञा से अली बिन अबीतालिब को अपनी जगह छोड़ा। अली खिंची तलवारों के बीच में रसूल के बिछौने पर आराम और सन्तोष के साथ सोते रहे। मदीना आकर जब मुश्रिकों से और इस्लाम के शत्रुओं से जिहाद का सिलसिला शुरु हुआ तो बड़ी ख़तरनाक लड़ाईयों में अली की तलवार ने शत्रुओं को परास्त किया। इस प्रकार इस्लाम के प्रचार में आरम्भ से अन्त तक अली रसूलुल्लाह के बाहु-बल बने रहे और सभा और रण दोनों में महत्वपूर्ण सेवाएं करते रहे।

उनके शुभ गुण

ज्ञान में आप का स्थान वह था कि रसूल के तमाम साथी (सहाबी) आपके आगे सर झुकाते थे और आप से धार्मिक समस्याओं में राय लेते थे। आपके व्यावहारिक व मानसिक उत्तमता के दोस्त और दुश्मन सब ही क़ायल थे। और हज़रत रसूल ने सदा आपके शुभ गुण मुसलमानों के सामने बयान किए और हर प्रकार से यह स्पष्ट किया कि उनका जैसा कोई दूसरा नहीं है।

अत्याचार पर सब्र

पैग़म्बर साहब के देहान्त के बाद एक पहले से सदी-बदी स्कीम के अन्तर्गत हज़रत अली की ख़िलाफ़त को आम मुसलमानों ने अस्वीकार किया और आप से शासन का अधिकार छीन लिया गया जिस पर आप ने इस्लाम धर्म के हित के हेतु सब्र किया। फिर भी रसूलुल्लाह की ख़िलाफ़त की वास्तविक ज़िम्मेदारियाँ आप ही के ऊपर थीं और आप विभिन्न रूपों में उनको पूरा करते थे। 25 वर्ष इसी तरह चुपचाप आपने सत्य-धर्म की सेवा की।

ज़ाहिरी ख़िलाफ़त

35 हि० में मुस्लिम जनता ने आपके सामने ख़लीफ़ा का पद उपस्थित किया। आप इस प्रकार इस पद

को अस्वीकार कर रहे थे मगर मुसलमानों से शपथ लेने के बाद कि जैसा आप कहेंगे वैसा ही हम सब करेंगे आपने इस पद को स्वीकार किया। लेकिन विरोधियों ने आपको चौन से न रहने दिया। जमल, सिफ़्फ़ीन और नहरवान की लड़ाईयाँ हुईं और आपको बहुत दुख हुआ। फिर भी आप ने इस थोड़ी अवधि में मुसलमानों में इस्लामी समानता, भाईचारा, सादगी, न्याय और नियम का सच्चा उदाहरण उपस्थित किया और रसूल के ज़माने की याद दिला दी।

देहान्त

अफ़सोस! कि केवल पाँच वर्ष शासन करने के बाद 19 रमज़ान सन् 40 हि० को अब्दुर्रहमान बिन मुल्जिम मुरादी, एक ख़ारिजी ने मस्जिदे कूफ़ा में आपके सर पर तलवार लगाई। दो दिन इसी ज़ख़्म की तकलीफ़ में व्यतीत कर के 21 रमज़ान को 63 वर्ष की आयु में अपने मालिक से जा मिले। नजफ़ में आपका मक़बरा तीर्थस्थान है।

दूसरे इमाम

हसन (अलैहिस्सलाम) नाम, अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली पिता, जनाब सैय्यिदा हज़रत फ़ातिमा ज़हरा माँ और रसूल नाना थे।

जन्म और पोषण

15 रमज़ान 3 हि० को मदीने में आपका जन्म हुआ बाल्यवस्था में अपने नाना रसूलुल्लाह की गोद में पले बढ़े। और उनके देहान्त के बाद अपने पिता, हज़रत अली द्वारा पालन-पोषण पाया।

इमामत व ख़िलाफ़त

40 हि० में जब हज़रत अली का देहान्त हुआ तो हज़रत इमाम हसन इमाम हुए और मुस्लिम जनता ने भी आपको ख़लीफ़ा मान लिया। मगर शाम के शासक मुआविया ने आप से लड़ाई करने के लिए चढ़ाई की। हालात ऐसे थे कि भयानक रक्तपात के बाद भी झगड़ा समाप्त होने की कोई आशा न थी। इसलिए आप ने कुछ शर्तों पर मुआविया के साथ सन्धि कर ली और ज़ाहिरी हुकूमत से अलग हो गए मगर अल्लाह की ओर से जो इमामत आपको प्राप्त थी वह लेने देने की वस्तु नहीं है और आप चुपचाप यथासम्भव अपने कर्तव्यों का पालन करते थे।

सन्धि और उसका अन्त

इस सन्धि में सबसे पहली शर्त जो आपने रक्खी थी वह यह थी कि मुआविया को क़ुरआन और रसूल के चरित्र के अनुसरण में शासन करना होगा। मुआविया के इस शर्त को स्वीकार कर लेने के बाद इमाम हसन की सन्धि एक विजयी शान रखती थी और आपकी यह क्रिया सम्पूर्णतः अल्लाह की आज्ञानुसार थी। मगर शाम के शासक ने इस सन्धि की किसी शर्त का पालन नहीं किया।

चरित्र

आपके जीवन में सहनशीलता, बर्दाश्त, सब्र, दान, पुन और बलिदान का हिस्सा बहुत ज़्यादा दिखाई देता है। इनके अलावा तमाम गुणों में आप अपने ख़ानदान के उत्तराधिकारी थे।

मृत्यु

दस वर्ष आपने सब से अलग थलग चुपचाप व्यतीत किए। आपकी यह ख़ामोश ज़िन्दगी भी दुश्मनों को एक आँख न भाई आपको ज़हर दिया गया जिस से 28 सफ़र 50 हि० को 47 वर्ष की आयु में आप ने इस संसार से प्रस्थान किया। मदीने में जन्नतुल बक़ी में दफ़्न हुए।

तीसरे इमाम

हुसैन (अलैहिस्सलाम) नाम, हज़रत अली पिता, फ़ातिमा ज़हरा माँ, रसूलुल्लाह नाना और इमाम हसन आपके बड़े भाई थे।

जन्म और पोषण

3 शाबान 4 हि० को मदीने में पैदा हुए और अपने बड़े भाई के साथ छः वर्ष तक रसूलुल्लाह की गोद में पले। इसेके बाद हज़रत अली की छाया में जवान हुए और बाप के बाद दस वर्ष तक बड़े भाई के दाहिने हाथ बने रहे।

इमामत

50 हि० में इमाम हसन की मृत्यु के बाद आप इमाम हुए। चूँकि इमाम हसन सन्धि करके एक रास्ता बना चुके थे इसलिए अल्लाह की आज्ञानुसार आप दस वर्ष तक अपने भाई की तरह चुपचाप जीवन बिताते रहे और प्रतिदिन बिगड़ते हुए हालात को देखते रहे।

यज़ीद की ख़िलाफ़त और बैअत मांगना

शाम के शासक मुआविया से सन्धि में एक बड़ी महत्वपूर्ण शर्त यह थी कि मुआविया को अपने बाद के लिए किसी को ख़लीफ़ा घोषित करने का अधिकार न

होगा। मुआविया ने सब शर्तों को तोड़ने के बाद इस शर्त को भी तोड़ा और अपने बाद के लिए अपने बेटे यज़ीद की ख़िलाफ़त की घोषणा कर दी। यज़ीद एक बड़ा ही दुष्ट व्यक्ति था और ऐसे काम करता था जिनको सुन कर ही मानवता का सर शर्म से झुक जाता है। इमाम हुसैन ने इनकार कर दिया कि मैं इसकी बैअत नहीं करूँगा अर्थात इसको रसूल का ख़लीफ़ा स्वीकार नहीं करूँगा मुआविया ने इस मामले में आपको ज़्यादा नहीं छेड़ा मगर सन् 60 हि० में मुआविया की मृत्यु हो गई और यज़ीद को ज़िद हो गई कि किसी प्रकार इमाम हुसैन से बैअत ले।

कर्बला में बलिदान

यज़ीद ने मदीने के हाकिम को ख़त लिखा कि हुसैन से बैअत ली जाए। नहीं तो उनका सर काट कर मेरे पास भेजा जाए। इमाम हुसैन को बैअत किसी प्रकार स्वीकार न थी मगर अपने प्राणों की रक्षा भी आवश्यक थी। आपने मदीने को छोड़कर मक्के में पनाह ली मगर आपको यहाँ पर भी पनाह न मिली। कुछ लोग हाजियों के भेस में भेजे गए कि वे आपको जिस तरह भी हो सके गिरफ़्तार कर लें या क़त्ल कर डालें। कूफ़े के लोगों के पत्र आपके पास बहुत से आए हुए थे कि यहाँ आईये और हमको सच्चा रास्ता दिखाइये। आप ने अपने चचा के बेटे मुस्लिम बिन अक़ील को वहाँ का हाल देखने के लिए भेजा भी था। अब आप भी कूफ़े की ओर चल पड़े मगर इतने दिनों में वहाँ इब्ने ज़ियाद का शासन स्थापित हो चुका था और हवा बदल गई थी। आपके दूत हज़रत मुस्लिम शहीद किए गए जिसकी सुनानी आप ने रास्ते ही में सुन ली थी। इब्ने ज़ियाद की फ़ौज हुर्र बिन यज़ीद रियाही की कमानदारी में आपको रोकने के लिए पहुँच गई और आपको घेर कर कर्बला की ज़मीन पर पहुँचाया।

दूसरी मुहर्रम को आप कर्बला पहुँचे और तीसरी मुहर्रम से कूफ़े से लश्कर आने लगा जिसकी संख्या चन्द दिन में कम से कम 30 हज़ार तक पहुँच गई। उमर बिन साद इस सेना का सेनापति था। सातवीं से पानी बन्द कर दिया गया और दसवीं मुहर्रम 61 हि० को आप अपने भाईयों, बेटों, भतीजों और सारे साथियों के साथ दोपहर की लड़ाई के बाद शहीद हुए। आपका सर भाले की नोक पर उठाया गया, ख़ेमों में आग लगा दी गई और आपके साथ जो महिलाएं थीं वे बन्दी बना ली गईं। दुश्मनों ने आपकी लाश को बिना दफ़न किए छोड़ दिया। तीसरे दिन असद गोत्र के लोगों ने आकर दफ़न किया। कर्बला में आपका रौज़ा तीर्थस्थान है।

चौथे इमाम

ज़ैनुल आबिदीन, अली बिन हुसैन (अलैहिस्सलाम)। आप हज़रत इमाम हुसैन के सब से बड़े बेटे थे। आपकी माता, शरहबानो ईरान के सम्राट की बेटी थीं। 15 जमादिस्सानी, 37 हि० को आपका जन्म हुआ। जब आपकी आयु केवल 2 वर्ष की थी तो आपके दादा हज़रत अली ने इस संसार को त्याग दिया। आप अपने चचा हज़रत हसन और पिता इमाम हुसैन की छाया में पले बढ़े।

सन् 61 हि० में हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के समय आप इतने बीमार थे कि उठना बैठना दूभर था। इस लिए जिहाद करने का हुक्म आपके ऊपर नहीं था। आप बिस्तर पर बेहोशी की हालत में रहे और घर के सब मर्द शहीद हो गए। इमाम हुसैन की शहादत के बाद आप अपने घर की महिलाओं के साथ क़ैद हुए और नगर-नगर फ़िराए जाने के बाद शाम (सीरिया) के क़ैदख़ाने से छूटकर मदीने गए जहाँ जीवन भर रहे। इसके बाद जब तक जिए, बाप को रोने को छोड़कर तपस्या के अलावा आपका कोई और काम न रह गया था।

आपकी तपस्या मशहूर है। बहुत नमाज़ पढ़ने के कारण आपका नाम ही सय्यदुस्साजिदीन (सजदा करने वालों के सरदार) हो गया। इसी के साथ शरीअत (धर्मशास्त्र) और रसूल के घराने की विद्याओं का शिक्षण चुपचाप करते रहे। 25 मुहर्रम, 95 हि० को 57 वर्ष की आयु में वलीद बिन अब्दुल मलिक के दिलाए हुए ज़हर से प्राण त्यागे और अपने चचा हज़रत इमाम हसन (उन पर सलाम हो) के पास जन्नतुल बक़ी में दफ़न हुए।

पाँचवे इमाम

मुहम्मद बाक़िर (अलैहिस्सलाम) नाम, इमाम ज़ैनुलआबिदीन के सुपुत्र थे। आपकी माता इमाम हसन की पुत्री थीं जिनका नाम फ़ातिमा था। पहली रजब, 57 हि० को पैदा हुए, साढ़े तीन वर्ष की आयु में कर्बला में उपस्थित थे और घराने की महिलाओं के साथ क़ैद की कठिनाइयाँ सहीं। उसके बाद अपने पिता की छाया में पले बढ़े।

आपको रसूलुल्लाह के घराने की विद्याओं के

प्रसार का बहुत अवकाश मिला और आप से बहुत अधिक संख्या में लोगों ने लाभ उठाया। आप के एक चेले, जाबिर बिन यजदि जाफ़ी ने सत्तर हज़ार हदीसें आप से याद कीं और इसी प्रकार अबान बिन तग़्लिब, अबू हमज़ा सुमाली, जरारा बिन आयन, मुहम्मद बिन मुस्लिम, अबूबसीर वग़ैरा बड़े-बड़े ज्ञानी थे जो आप से पढ़-पढ़ कर प्रसिद्ध हुए।

7 ज़िलहिज्जा, 114 हि० को 57 वर्ष की आयु में हिशाम बिन अब्दुल मलिक की तरफ़ से दिये गये ज़हर से आप ने प्राण त्यागे। जन्नतुल बक़ी में अपने पिता के पास दफ़न हुए।

छटे इमाम

जाफ़र सादिक़ (अलैहिस्सलाम), इमाम मुहम्मद बाक़िर (अलैहिस्सलाम) के सुपुत्र थे। 17 रबीउल अव्वल को सन् 73 हिजरी में पैदा हुए। अपने पिता के बाद अहलेबैत (रसूल के घराने) की विद्याओं की नदियाँ बहा दीं। आपके चेलों की संख्या चार हज़ार से अधिक थी। इस्लामी देशों के लोग दूर-दूर से विद्या प्राप्त करने आपके पास आते थे जिनमें अपने पराए का कोई अन्तर न था।

15 शव्वाल 147 हिजरी को 65 वर्ष की आयु में मनसूर दवानेक़ी की ओर से दिलवाए गए ज़हर से शहीद हुए और जन्नतुल बक़ी में अपने बुजुर्गों के पास दफ़न हुए।

सातवें इमाम

मूसा काज़िम (उन पर सलाम हो) इमाम जाफ़र सादिक़ के सुपुत्र थे। 7 सफ़र 127 हि० को पैदा हुए और अपने पिता के बाद इमामत के पद को शोभा दी। तपस्या, विद्या, ज्ञान, दान-पुन, हर गुण में अपने बाप-दादा की मूरत थे और अपने ज़माने में सब से अधिक गुणवान थे। धर्म की शिक्षा देने में बराबर लगे रहे।

हारून रशीद ने आपको क़ैद किया और आपके जीवन के आख़िरी चन्द साल तनहाई की क़ैद में व्यतीत हुए। अन्त में क़ैदख़ाने ही में 55 वर्ष की आयु में 25वीं रजब, 183 हि० को हारून रशीद के ज़हर से शहीद हुए और बग़दाद के पास उस जगह पर जो आप ही के नाम पर काज़्मैन कहलाती है, दफ़न हुए।

आठवें इमाम

अली रज़ा (अलैहिस्सलाम) इमाम मूसा काज़िम के सुपुत्र थे। 11 ज़ीक़ादा 147 हि० को पैदा हुए। अपने पिता के बाद इमाम हुए। आपके ज्ञान, पवित्र नियम, तपस्या और समस्त गुणों के कारण सारे मुसलमान आप का बहुत आदर करते थे।

मामून रशीद बादशाह को आपके इस बढ़ते हुए प्रभाव से खटका पैदा हुआ और उसने अपने ख़याल में आप को अपने क़ाबू में करने के लिए आपको उत्तराधिकारी घोषित किया जाना स्वीकार करने पर मजबूर किया। आप बहुत इनकार करते रहे लेकिन मामून हिंसा पर उतर आया। मजबूर होकर आपने स्वीकार किया। मगर मामून का ख़याल ग़लत सिद्ध हुआ और इसके बाद भी आप ने अपने ख़ानदान की सादी ज़िन्दगी और धर्म की असली शिक्षा देने को नहीं छोड़ा। इसी लिए मामून को आपका जीवित रहना खल रहा था और आख़िर उसने आपको ज़हर दे दिया जिस से 17 सफ़र 203 हि० को आपकी मृत्यु हुई। आप ईरान के नगर मशहद में दफ़न हैं।

नवें इमाम

मुहम्मद तक़ी (अलैहिस्सलाम) इमाम रज़ा के सुपुत्र थे। 10 रजब 165 हि० को पैदा हुए। अपने पिता की मृत्यु के समय आप अपने आठवें वर्ष में थे मगर अल्लाह की दी हुई शिक्षा का यह प्रदर्शन था कि उसी समय आपकी विद्या और ज्ञान का लोहा सब मान गए। उसी आयु में बग़दाद के बड़े-बड़े ज्ञानियों और विद्वानों से बहस की और मामून ने अपनी बेटी उम्मुल फ़ज़्ल का विवाह आपके साथ कर दिया।

यह इसलिए किया गया था कि शायद इसी प्रकार इमाम मुहम्मद तक़ी सच्चे इस्लाम के प्रचार में कमी कर दें लेकिन यह तरकीब असफ़ल हुई। आख़िर में मोतसिम बिल्लाह अब्बासी सम्राट की ओर से आप को ज़हर दिया गया और केवल 25 वर्ष की आयु में 28 ज़ीक़ादा 220 हि० को अपने प्राण त्यागे।

दसवें इमाम

अली नक़ी (अलैहिस्सलाम) इमाम मुहम्मद तक़ी के सुपुत्र थे। 5 रजब 214 हि० को पैदा हुए और अपने पिता के बाद इमामत का पद संभाला और सच्चे मुसलमानों को शिक्षा देने लगे।

आख़िर मुतवक्किल अब्बासी ने आपको मदीने में रहने न दिया और 243 हि० में अपनी राजधानी सामर्रा में बुलाकर नज़रबन्द कर दिया। 11 वर्ष आप ने

नज़रबन्दी में बिताए और 3 रजब 254 हि० को 40 वर्ष की आयु में मोतज़ बिल्लाह के ज़हर से शहीद हुए।

ग्यारहवें इमाम

हसन असकरी (अलैहिस्सलाम) इमाम अली नक़ी (उन पर सलाम) के सुपुत्र थे। 10 रबीउस्सानी, 232 हि० को जन्म लिया और 11 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ सामर्रा में आकर नज़रबन्दी की हालत में रहना आरम्भ किया। अपने पिता के बाद इमाम हुए और चुपचाप तपस्या और धर्म शिक्षण में समय बिताते रहे। आख़िर आपको मोतमद बिल्लाह अब्बासी ने ज़हर दिलवाया और 7 रबीउल अव्वल 260 हि० को 27 वर्ष की आयु में संसार से प्रस्थान किया।

बारहवें इमाम

हज़रत इमाम महदी (उन पर सलाम हो और उनको अल्लाह शीघ्र प्रकट करे) इमाम हसन असकरी के सुपुत्र हैं। आप हज़रत हुज्जत (अल्लाह की निशानी), साहिबुल-अम्र (प्रशासन के उत्तरदायी), इमाम मुन्तज़र (प्रतीक्षित इमाम), महदी मौऊद (सच्चे रास्ते वाले जिनके आने का वादा किया गया है) और क़ायमे-आले मुहम्मद (रसूलुल्लाह की संतानों में से (शान्ति) स्थापित करने वाले), आदि पदवियों द्वारा याद किए जाते हैं। आपका असली नाम वही है जो रसूलुल्लाह का है (अर्थात मुहम्मद), मगर आप के आदर (जो आपके इमामे वक़्त अर्थात इस समय के इमाम होने और आपके आने वाली ज़िम्मेदारियों के अनुसार है) के कारण आपका नाम नहीं लिया जाता और इन्हीं पदवियों से आप याद किये जाते हैं।

आप 15 शाबान 256 हि० को सामर्रा में पैदा हुए। अल्लाह की मस्लहत और इच्छा यही थी कि आपको सारे संसार की आँखों से छिपा हुआ रक्खा जाए। आपके पिता के समय में बहुत से ख़ास-ख़ास लोगों ने आपको देखा भी था। हदीसों में आपके जन्म की भविष्यवाणियाँ बराबर होती रहती थीं इसलिए बादशाह की ओर से आपका वद्य करने का हर प्रयत्न किया जाता था मगर अल्लाह को उनकी रक्षा आख़िर ज़माने तक करनी थी। आपके पिता के बाद बहुत कुछ आपको खोजा गया मगर सारी कोशिश असफ़ल हुई। और आपने इमाम के कार्य को करना शुरु कर दिया। 327 हि० तक आपकी ओर से एक विशेष नाएब (अपेक्षी) नियुक्त रहता था जो धर्म-प्रचार करता था, प्रश्नों के उत्तरों पर आपके हस्ताक्षर कराता था और शीओं की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करता था। इस सारे समय को ग़ैबत-सुग़रा (छिपे रहने की छोटी अवधि) कहा जाता है। इसके बाद से अल्लाह की इच्छा यही हुई कि कोई नाएब भी न रहे। यह ग़ैबते-कुबरा (छिपे रहने की बड़ी अवधि) है। जब अल्लाह की मस्लहत होगी पर्दा हटेगा और इमाम प्रकट होंगे।

कयामत

इंसान के लिए इस दुनिया के जीवन के बाद एक और ज़िन्दगी है जिसमें इस जीवन में किये हुए अच्छे और बुरे कर्मों का अच्छा और बुरा बदला मिलेगा। इसी को आख़िरत, हश्र, क़यामत या मआद कहते हैं जो इस्लामी सिद्धान्तों में एक बड़ा महत्व रखता है।

दण्ड या पुरस्कार की ज़रूरत

जब विश्व करतार की क्रियाओं को हम आदर्श, ज्ञान और शक्ति से सम्पूर्ण मान चुके और यह भी मान चुके कि उसकी ओर से हमको उचित मार्ग भी दिखाया जा चुका तो अवश्य मानना पड़ेगा कि उसकी आज्ञाओं का पालन करने वालों और उनके विरोध करने वालों के परिणाम में कोई अन्तर हो, एक को पुरस्कार और दूसरे को दण्ड मिले।

पुरस्कार-दण्ड के लिए दूसरा जीवन

देखा गया है कि कभी-कभी नेक लोगों का सारा जीवन तकलीफ़ में कट जाता है और बुरे लोगों का आराम में। इसी से ये समझना पड़ता है कि पुरस्कार और दण्ड के लिए यह सांसारिक जीवन नहीं है वरन् इस के लिए एक दूसरा जीवन है जो इस जीवन के बाद आएगा। इसी को क़ुरआन में ''आख़िरत'' कहा गया है।

दूसरा जीवन कैसा होगा?

'मनुष्य' केवल द्रव्यों के मिलने से नही बना है कि शरीर के बनने के पहले वह न रहा हो और शरीर के अन्त के साथ उसका का भी अन्त हो जाए वरन् शरीर के अतिरिक्त आत्मा (रूह) भी होती है। रूह शरीर से अलग एक चीज़ है। शरीर के संग्रहण के बाद रूह का उस से सम्बन्ध स्थापित हो जाने का नाम जीवित रहना है और उस सम्बन्ध के टूट जाने को मृत्यु कहते हैं और मृत्यु या देहान्त के बाद भी रूह बाक़ी रहती है और जब अल्लाह चाहेगा पुनः उन को एकत्रित कर देगा। यही उस

व्यक्ति का दूसरा जीवन होगा जिसे मआद (पलटना) कहते हैं।

बरज़ख़

मरने के बाद से इस दूसरे जीवन तक के बीच की अवधि को बरज़ख़ कहते हैं। अच्छे और बुरे कर्मों के फल के रूप में इंसान की रूह को आराम या तकलीफ़ इस अवधि में होती है। अब अगर उस के बुरे कर्म अधिक दण्ड के योग्य नहीं हैं तो अधिकतर उसकी सज़ा इतने ही में ख़त्म हो जाती है और उसके कर्म बहुत बुरे हैं तो उसको सज़ा का अन्तिम हुकुम आख़िरत में सुनाया जाएगा।

हिसाब और मीज़ान (तुला)

दुनिया में अधिक्तर इंसान की आँखों पर पर्दा पड़ा रहता है और वह अपनी बुराईयों को नहीं देख पाता और कभी-कभी वह अपने आपको अच्छा समझने लगता है। कभी-कभी दिखलावा और बनावट उसकी तबीअत में इस बुरी तरह से रच जाता है कि वह ख़ुद उनकी ओर ध्यान ही नहीं दे सकता। आख़िरत में इंसान की अच्छाई और बुराई का इस प्रकार स्पष्ट रूप से उसके सामने आ जाना कि स्वयं उसको उनका पूरा-पूरा अनुभव हो जाए "हिसाब" है। इसी को मीज़ान (तुला) कहा गया है।

दण्ड या पुरस्कार देने के लिए पहले हिसाब ज़रूरी है।

जन्नत व जहन्नुम (स्वर्ग और नर्क)

इस्लामी विश्वास के अनुसार जन्नत और जहन्नुम दशाएं नहीं हैं वरन् यहूदी और ईसाई धर्म के समान इस्लाम भी यह बताता है कि जन्नत और जहन्नुम (जिनको बहिश्त और दोज़ख़ भी कहते हैं) दो जगहें हैं जो अल्लाह ने पहले ही पैदा कर दी हैं। जन्नत अच्छे लोगों के लिए और जहन्नुम बुरे लोगों के लिए है।

एक तरफ़ इस्लाम के धर्मात्मा यह कहते दिखाई देते हैं कि "हे अल्लाह, मैंने तेरी आज्ञा का पालन तेरी जन्नत की लालच या जहन्नुम के डर से नहीं किया वरन् इसलिए कि तुझे इस योग्य समझा कि तेरी आज्ञा का पालन और तेरी पूजा करना चाहिए।" (हज़रत अली)

और कभी यह बताया कि "कुछ लोग अल्लाह का आज्ञापालन जन्नत की लालच में करते हैं। यह मज़दूरों का सा आज्ञापालन है। कुछ लोग जहन्नम के डर से करते हैं। यह दास और ग़ुलाम का सा आज्ञापालन है। और कुछ लोग ऐसे हैं जो केवल उसकी प्रसन्नता का ध्यान करके उसका आज्ञापालन करते हैं। यह आज़ाद लोगों का आज्ञापालन है"। (इमाम जाफ़र सादिक़)

परन्तु इस्लाम एक प्रयोगशील धर्म है। इसलिए उस में हर प्रकार के लोगों के विचारास्तर के अनुसार बातें हैं और इसी लिए बार-बार जन्नत और जहन्नुम का भी उल्लेख किया गया है ताकि जो लोग इतने ऊँचे नहीं जा सकते उनके लिए भी नेकी करने के कारण और बदी करने में रुकावट डालने के साधन हो सकें।

और इसी लिए जन्नत के उल्लेख के साथ वहाँ की शराब-तहूर (पवित्र सुधा) और हूरों (अपसराओं) का भी उल्लेख किया गया है। जिस प्रकार की ख़्वाहिशों से दुनिया में ख़राबियाँ पैदा होती हैं उन ही को उन ख़राबियों के दूर करने का यन्त्र बनाया गया है।

आवागमन

इस्लाम ने पुरस्कार और दण्ड को जिस प्रकार समझाया है उसके यही वह उद्देश्य हैं जो कुछ धर्मों के अनुसार बताए गए आवागमन से नहीं प्राप्त हो सकते। इसलिए कि जब तक यह न मालूम हो कि हमको किस बात के पुरस्कार या दण्ड के रूप में यह जन्म मिला है, दण्ड या पुरस्कार का हमारे ऊपर क्या प्रभाव हो सकता है? फिर ऐसा भी कहा जाता है कि कभी-कभी दूसरा जन्म किसी जानवर की शक्ल में भी हो सकता है और तब उसको तो और भी कुछ नहीं प्रतीत हो सकता। इसके अतिरिक्त फिर यदि हर वर्तमान जन्म किसी बीते जन्म के कर्मों का फल है और उसकी तमाम विशेषताएं और चिन्ह रखने में हम विवश हैं तो फिर इस जन्म पर कोई दूसरा दण्ड या पुरस्कार मिलना व्यर्थ सी बात है।

मस्ख़ (रूप परिवर्तन) और आवागमन

सज़ा के तौर पर अनेक जातियों का रूप परिवर्तन होना क़ुरआन से मालूम होता है लेकिन उसका आवागमन से कोई सम्बन्ध नहीं है।

मस्ख़ के पहले आदमी मरता नहीं है बल्कि उसी जन्म में उस रूह के उस शरीर में रहते हुए उस शरीर की शक्ल किसी जानवर की सी हो जाती है जो इंसान के लिए एक अपमान की बात है इसलिए सज़ा की हैसियत रखती है और दूसरों के लिए चेतावनी है। मगर आवागमन के यह अर्थ हैं कि आदमी मर गया अर्थात

रूह उसके शरीर से निकल गई और फिर किसी आदमी या जानवर के शरीर में प्रवेश करके माँ के पेट से पैदा हुई। यह मस्ख़ से बिल्कुल विभिन्न है।

आवागमन-सिद्धान्त की मौलिक त्रुटियाँ

आवागमन में हर जन्म पिछले जन्म के कर्मों का फल होता है। यदि पिछले जन्म के कर्मों के दण्ड के रूप में रूह किसी जानवर या पेड़ पौधे में डाल दी गई तो अब नये कर्मों का कोई सवाल नहीं पैदा होता। इसलिए अब इसके बाद किसी दूसरे जन्म की आवश्यकता बाक़ी नहीं रहती।

अगर यह मान भी लिया जाए कि वह रूह पाक होकर फिर आदमी का जन्म लेती है तो फिर उसको जब पिछले जन्म में सब दण्ड और पुरस्कार मिल चुके हैं तो उसके इस नए जन्म में उसको कोई कष्ट या आराम-ख़ुशी न होना चाहिए लेकिन ऐसा होना हर मनुष्य के लिए आवश्यक है।

इसलिए मानना पड़ेगा कि कुछ लोग जो जानवर-आदि के जन्म लेकर सज़ा भोग चुके हैं अब फिर इंसान का जन्म न लेंगे। इस तरह से हमेशा इंसानों की संख्या घटती रहनी चाहिए मगर हम देखते हैं कि वह हमेशा बढ़ती रहती है।

वह बच्चे जो पैदा होते ही मर जाते हैं और उन्हें दुनिया में न चैन नसीब होता है न तकलीफ़ ही होती है तो ऐसा किस जन्म का फल होता है? और जब अब उन्होंने कुछ किया ही नहीं तो उनका अगला जन्म क्या हो सकता है?

जानवरों के रूप में जन्म लेना ही पिछले कर्मों की सज़ा है तो फिर जानवरों को जो तकलीफ़ होती है वह किस पाप की सज़ा है?

किसी जानवर को नहीं देखा जाता कि वह जिस जानवर के रूप में है उसकी प्रकृति के विरूद्ध कुछ करता हो और जब जानवरों में बहुत से ऐसे हैं जो किसी पाप के दण्ड में जानवर बनाए गए हैं तो इस दण्ड का उनके ऊपर असर ही क्या हो सकता है कि अगले जन्म में वे उसका ख़याल रक्खें? दूसरे जब हम जानते हैं कि हमको अपने बुरे कर्मों के दण्ड में जिस जानवर का जन्म मिलेगा उसी के अनुसार हमारी तबीअत भी होगी और हम को किसी तकलीफ़ का अनुभव इस बात में न होगा तो हम ऐसे आने वाले दण्ड से डरने ही क्यों लगे?

अपने पिछले जन्म की बातें किसको याद आती हैं कि वह उस जन्म में मिले हुए दण्ड को याद करके बुरे कामों से बचे या पुरस्कार को याद करके अच्छे काम करे?

जिस जन्म में हम हैं अगर वह किसी जानवर का है तो हम को दण्ड का अनुभव ही न होगा तो ऐसा दण्ड, दण्ड ही न हुआ।

क़यामत का दुनिया के अन्त में होना

बहुत से ऐसे काम हैं जिनके असर का सिलसिला हमेशा या बहुत दिनों तक चलता रहता है जैसे किसी बीमारी की दवा ईजाद करना या किसी हानिकारक आदत-फैशन (जैसे किसी नशे) का पैदा करना और सिखा देना। तो जब तक उस काम के लाभ और हानि जारी रहेंगे उस समय तक उस पर पुरस्कार या दण्ड कितना हो यह निश्चित नहीं हो सकता। इसलिए आवश्यक है कि इस दुनिया के ख़त्म होने के बाद जब कर्मों का संसार समाप्त हो जाए दूसरी दुनिया पुरस्कार और दण्ड के लिए हो।

दुनिया में दण्ड व पुरस्कार

इस्लाम इसको भी मानता है कि कभी-कभी बाज़ कामों का अच्छा या बुरा बदला इंसान को इसी जीवन ही में भी मिल जाता है मगर इसका मतलब यही है कि लोग अपनी आँखों से देखकर भी अच्छा काम करें और बुरे कामों से बचें। और इस से क़यामत की आवश्यकता और महत्व पर कोई असर नहीं पड़ता जैसा ऊपर दिखाया गया है।

ग़ौर से देखा जाए तो मालूम होगा कि बहुत से दण्ड और पुरस्कार प्राकृतिक नियमों (Laws of Nature) के अन्तर्गत ही होते हैं। मिसाल के तौर पर, जो आदमी बहुत शराब पियेगा उसका स्वास्थ आप ही बिगड़ेगा। इनके अतिरिक्त जो दण्ड या पुरस्कार है उनके लिए क़यामत है।

टिप्पड़ियाँ

1- जहन्नुमः शुद्ध अरबी रूप, 'जहन्नम'

2- हूरः पवित्र सुन्दर कुमारियाँ जो स्वर्ग में हैं जो इस दुनिया के जैसे शरीर नहीं रखतीं। वे कोई नर्तकियाँ भी नहीं है।

